नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सत्र 2023-24 से पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित किया गया है। यह संजीव पास बुक्स पूर्णतः नवीन पुनर्संयोजित पाठ्यपुस्तकों एवं परिवर्तित पाठ्यक्रम पर आधारित है।

पास बुक्स में नं. 1

संजीव®
पास बुक्स

अनिवार्य हिन्दी-XII

(कक्षा 12 के विद्यार्थियों के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा बोर्ड की website पर जून, 2023 में जारी पूर्णतः नवीन परिवर्तित पाठ्यक्रमानुसार

- माध्य. शिक्षा बोर्ड मॉडल पेपर 2022-23 एवं बोर्ड पेपर 2023 के प्रश्नों का अन्दर समावेश
- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित

2024

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 360/-

● प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन

धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,

जयपुर-3

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
website : www.sanjivprakashan.com

● © प्रकाशकाधीन

● **मूल्य : ₹ 360.00**

● लेजर कम्पोजिंग :

संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

● मुद्रक :

मनोहर आर्ट प्रिन्टर्स, जयपुर

****

❖ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।

❖ इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।

❖ सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा बोर्ड की website पर जून, 2023 में जारी नवीन परिवर्तित पाठ्यक्रम

अनिवार्य हिन्दी–कक्षा 12

इस विषय की परीक्षा योजना निम्नानुसार है—

प्रश्न–पत्र	समय (घण्टे)	प्रश्न–पत्र के लिए अंक	सत्रांक	पूर्णांक
एक पत्र	3.15	80	20	100

अधिगम क्षेत्र	अंक
अपठित बोध	12
रचनात्मक लेखन	16
व्यावहारिक व्याकरण	8
पाठ्यपुस्तक : **आरोह** (भाग-2)	32
पाठ्यपुस्तक : **वितान** (भाग-2)	12

खण्ड-1

अपठित बोध — **12 अंक**

(क) अपठित गद्यांश (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) — 6 अंक

(ख) अपठित पद्यांश (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) — 6 अंक

खण्ड-2

रचनात्मक लेखन — **16 अंक**

(1) निबन्ध लेखन (विकल्प सहित) (300 शब्द) — 5 अंक

(2) पत्र व प्रारूप लेखन (अर्द्धशासकीय-पत्र, निविदा, विज्ञप्ति, ज्ञापन, अधिसूचना) (विकल्प सहित) — 4 अंक

अभिव्यक्ति एवं माध्यम पाठ्यपुस्तक पर आधारित–

(3) विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन पर आधारित दो बहुचयनात्मक एवं एक लघूत्तरात्मक प्रश्न (40-45 शब्द) — 4 अंक

(4) फीचर लेखन/आलेख (लगभग 100 शब्द) — 3 अंक

व्यावहारिक व्याकरण — **8 अंक**

(दो बहुचयनात्मक एवं छः रिक्त स्थान पूर्ति के प्रश्न)

(1) भाषा, व्याकरण एवं लिपि का परिचय — 2 अंक

(2) शब्द शक्ति — 2 अंक

(3) अलंकार—अनुप्रास, श्लेष, यमक, वक्रोक्ति, विरोधाभास, अतिशयोक्ति, विभावना, संदेह, भ्रांतिमान — 2 अंक

(4) पारिभाषिक शब्दावली — 2 अंक

खण्ड-3

पाठ्यपुस्तक–आरोह-भाग 2 — **32 अंक**

(i) 1 सप्रसंग व्याख्या गद्य भाग से (विकल्प सहित) — 1 × 6 = 6 अंक

(ii) 1 सप्रसंग व्याख्या पद्य भाग से (विकल्प सहित) — 1 × 6 = 6 अंक

(iii) किसी एक कवि या लेखक का परिचय (विकल्प सहित) (80-100 शब्दों में उत्तर) — 1 × 4 = 4 अंक

(iv) प्रश्नोत्तर गद्य भाग से तीन बहुचयनात्मक, एक लघूत्तरात्मक एवं विकल्प सहित एक दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न — 08 अंक

(v) प्रश्नोत्तर पद्य भाग से तीन बहुचयनात्मक, एक लघूत्तरात्मक एवं विकल्प सहित एक दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न — 08 अंक

खण्ड-4

पाठ्यपुस्तक–वितान भाग 2 — **12 अंक**

(क) दो दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (विकल्प सहित) (60-80 शब्दों में उत्तर) — 6 अंक

(ख) दो बहुचयनात्मक एवं दो लघूत्तरात्मक प्रश्न — 6 अंक

निर्धारित पुस्तकें–

1. **आरोह-भाग 2**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
2. **वितान-भाग 2**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
3. **अभिव्यक्ति एवं माध्यम**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित

नोट– विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

विषय-सूची

आरोह भाग-2

काव्य-खण्ड

1.	हरिवंश राय बच्चन	1-11
2.	आलोक धन्वा	11-18
3.	कुँवर नारायण	19-28
4.	रघुवीर सहाय	28-38
5.	शमशेर बहादुर सिंह	38-43
6.	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	44-53
7.	गोस्वामी तुलसीदास	53-65
8.	फिराक गोरखपुरी	65-70
9.	उमाशंकर जोशी	70-75

गद्य-खण्ड

10.	भक्तिन	(महादेवी वर्मा)	76-90
11.	बाजार दर्शन	(जैनेन्द्र कुमार)	91-108
12.	काले मेघा पानी दे	(धर्मवीर भारती)	108-119
13.	पहलवान की ढोलक	(फणीश्वरनाथ 'रेणु')	119-129
14.	शिरीष के फूल	(हजारी प्रसाद द्विवेदी)	129-142
15.	(i) श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा		
	(ii) मेरी कल्पना का आदर्श समाज	(बाबा साहेब भीमराव आम्बेडकर)	142-153

वितान भाग-2

1.	सिल्वर वैडिंग	(मनोहर श्याम जोशी)	154-165
2.	जूझ	(आनन्द यादव)	165-176
3.	अतीत में दबे पाँव	(ओम थानवी)	176-186

अपठित बोध

1.	अपठित काव्यांश	187-207
2.	अपठित गद्यांश	207-223

रचनात्मक लेखन

1. निबन्ध-लेखन **224-270**

1. साइबर अपराध के बढ़ते कदम

अथवा

सूचना प्रौद्योगिकी में बढ़ते अपराध 226

2. कृत्रिम बुद्धिमता (AI) वरदान या अभिशाप
अथवा
कृत्रिम बुद्धिमता
अथवा
कृत्रिम बुद्धिमता मानवता के लिए घातक है 226
3. वैश्विक महामारी के दौर में ऑनलाइन शिक्षण
(माध्य. शिक्षा बोर्ड, मॉडल पेपर, 2021-22) 227
4. राजस्थान की सतरंगी संस्कृति (माध्य. शिक्षा बोर्ड, मॉडल पेपर, 2021-22) 228
5. महिला सशक्तिकरण (माध्य. शिक्षा बोर्ड, मॉडल पेपर, 2021-22)
अथवा
स्त्री सशक्तिकरण (माध्य. शिक्षा बोर्ड, मॉडल पेपर, 2022-23) 229
6. पेट्रोल एवं डीजल की बढ़ती कीमतें (माध्य. शिक्षा बोर्ड, मॉडल पेपर, 2021-22) 230
7. कोरोना वायरस—21वीं सदी की महामारी
अथवा
कोरोना महामारी-एक अभिशाप (माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2023)
अथवा
कोरोना वायरस महामारी के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव 230
8. मेक इन इण्डिया अथवा स्वदेशी उद्योग 231
9. आत्मनिर्भर भारत 232
10. स्वास्थ्य रक्षा : आयुष्मान योजना
अथवा
स्वास्थ्य ही श्रेष्ठ धन है 233
11. कैशलेस अर्थव्यवस्था : चुनौतीपूर्ण सकारात्मक कदम 233
12. स्वच्छता का महत्त्व 234
13. भारतीय संस्कृति का अनुपम उपहार : योग
अथवा
योग की उपादेयता
अथवा
योग : स्वास्थ्य की कुंजी
अथवा
योग भगाएँ रोग 234
14. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ (माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2022) 235
15. शिक्षा का अधिकार
अथवा
अनिवार्य बाल-शिक्षा का अधिकार 236
16. रोजगार गारन्टी योजना : मनरेगा
अथवा
मनरेगा : गाँवों में रोजगार योजना

अथवा

गाँवों के विकास की योजना : मनरेगा 237

17. आतंकवाद : वैश्विक क्षितिज पर

अथवा

आतंकवाद : एक वैश्विक समस्या 237

18. खाद्य पदार्थों में मिलावट और भारतीय समाज

अथवा

मिलावटी माल का बढ़ता कारोबार 238

19. प्लास्टिक थैली : पर्यावरण की दुश्मन

अथवा

प्लास्टिक कैरी बैग्स : असाध्य रोगवर्धक 239

20. बढ़ते वाहन : घटता जीवन-धन

अथवा

वाहन–वृद्धि से स्वास्थ्य-हानि 240

21. बालिका शिक्षा 240

22. मानवता के लिए चुनौती-कन्या-भ्रूण-हत्या

अथवा

कन्या-भ्रूण हत्या : लिंगभेद का अपराध 241

23. मेरा प्रिय कवि

अथवा

मेरा प्रिय साहित्यकार : गोस्वामी तुलसीदास 242

24. सर्व शिक्षा अभियान

अथवा

शिक्षा का प्रसार : उन्नति का द्वार

अथवा

साक्षरता अभियान के बढ़ते कदम **(माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2023)** 242

25. इन्टरनेट–सूचना क्रान्ति

अथवा

इन्टरनेट : सूचना एवं ज्ञान का भण्डार

अथवा

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के लिए इंटरनेट की आवश्यकता **(माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2022)** 243

26. राजस्थान के पर्यटन स्थल

अथवा

राजस्थान में पर्यटन की संभावनाएँ

अथवा

राजस्थान और पर्यटन की सम्भावनाएँ **(माध्य. शिक्षा बोर्ड, मॉडल पेपर, 2022-23)** 244

27. राजस्थान के प्रसिद्ध मेले

अथवा

राजस्थान के प्रमुख पर्वोत्सव 245

28. घटती सामाजिकता : बढ़ते संचार साधन

अथवा

संचार क्रांति और समाज 246

29. समाज-निर्माण में नारी की भूमिका

अथवा

समाज में नारी के बढ़ते कदम

अथवा

समाज में नारी का योगदान **(माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2023)** 246

30. अतिवृष्टि का वह दिन

अथवा

जब गाँव में भीषण वर्षा हुई 247

31. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सैनिक शिक्षा 248

32. आधुनिक सूचना - प्रौद्योगिकी

अथवा

सूचना-क्रांति के युग में भारत 248

33. कम्प्यूटर : अभिशाप या वरदान

अथवा

कम्प्यूटर के चमत्कार 249

34. राष्ट्र के प्रति हमारा नैतिक दायित्व

अथवा

राष्ट्र के प्रति हमारा दायित्व **(माध्य. शिक्षा बोर्ड, मॉडल पेपर, 2022-23)** 250

35. मानव के लिए विज्ञान : वरदान या अभिशाप 251

36. वर्तमान की महती आवश्यकता : राष्ट्रीय एकता

अथवा

राष्ट्रीय और भावात्मक एकता

अथवा

राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता 251

37. वर्तमान शिक्षा और सदाचार

अथवा

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली : गुण और दोष 252

38. विद्यार्थी और वर्तमान राजनीति 253

39. युवा छात्रों में बढ़ता असंतोष 253

40. नये भारत की आशा-युवावर्ग

अथवा

राष्ट्र-निर्माण में युवा पीढ़ी की भूमिका

अथवा
विद्यार्थियों का राष्ट्र-निर्माण में योगदान
अथवा
युवा शक्ति एवं चुनौतियाँ (माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2023) 254
41. भारत में लोकतंत्र-मेरी दृष्टि में
अथवा
भारत में जनतंत्र का भविष्य 255
42. इक्कीसवीं सदी की कल्पनाएँ व सम्भावनाएँ
अथवा
मेरे सपनों का भारत 255
43. विद्यार्थी-जीवन एवं अनुशासन
अथवा
अनुशासन का महत्त्व 256
44. बेरोजगारी की समस्या
अथवा
बेरोजगारी की समस्या : कारण और निराकरण के उपाय 257
45. समाचार-पत्र
अथवा
समाचार-पत्रों का महत्त्व 258
46. दहेज-दानव
अथवा
समाज का अभिशाप : दहेज प्रथा 258
47. महँगाई : समस्या और समाधान
अथवा
बढ़ती महँगाई : घटता जीवन स्तर
अथवा
मूल्यवृद्धि की समस्या
अथवा
बढ़ती महँगाई का जीवन पर प्रभाव (माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2022) 259
48. राजस्थान का अकाल 260
49. भ्रष्टाचार का महादानव
अथवा
भ्रष्टाचार : कारण व निवारण 261
50. राजस्थान के लोकगीत 261
51. बाल-विवाह : सामाजिक अभिशाप 262
52. मोबाइल फोन : वरदान या अभिशाप 263
53. जल-संरक्षण : हमारा दायित्व

अथवा

जल है तो जीवन है 263

54. मनोरंजन के आधुनिक साधन 264

55. कम्प्यूटर शिक्षा-आधुनिक समय की आवश्यकता

अथवा

कम्प्यूटर शिक्षा की उपयोगिता 265

56. नदी जल स्वच्छता अभियान 266

57. राजस्थान में बढ़ता जल-संकट 266

58. पर्यावरण प्रदूषण

अथवा

बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण : एक समस्या 267

59. पर्यावरण संरक्षण परमावश्यक

अथवा

पर्यावरण संरक्षण और युवा 268

60. निरक्षरता : एक अभिशाप 268

61. कटते जंगल : घटता मंगल 269

62. विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता

अथवा

नैतिक शिक्षा का महत्त्व 270

2. पत्र एवं प्रारूप लेखन (अर्द्ध शासकीय पत्र, निविदा, विज्ञप्ति, ज्ञापन, अधिसूचना) 271-297

3. विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन 298-310

4. फीचर लेखन 311-324

5. आलेख 325-334

व्यावहारिक व्याकरण

(1) भाषा, व्याकरण एवं लिपि का परिचय 335-341

(2) शब्द-शक्ति 341-349

(3) अलंकार 349-363

(4) पारिभाषिक शब्दावली 363-370

❑❑❑

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2023

हिन्दी (अनिवार्य)

समय : 3 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

(1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
(2) **सभी** प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
(3) प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
(4) जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
(5) प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड-अ

1. **बहुविकल्पी प्रश्न–**

निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए :

आम यहाँ का विशेष मेवा है। इसमें रस भरा रहता है और इसका बौर बसन्त का अग्रदूत है। हमारे यहाँ अश्वत्थ (पीपल) को भी विशेष महत्ता दी गई है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान की विभूतियों में अश्वत्थ को भी माना गया है—'अश्वत्थः सर्व वृक्षाणाम्।' भारतीय संस्कृति में जिन-जिन वस्तुओं को महत्ता दी गई है वे सब श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान की विभूतियों के रूप में आ गई हैं। भगवान बुद्ध को भी अश्वत्थ वृक्ष के ही नीचे बुद्धत्व प्राप्त हुआ था। स्थावर वस्तुओं में हिमालय को, सरिताओं में गंगा को, पक्षियों में गरुड़ को तथा ऋतुओं में बसन्त ऋतु को महत्ता दी गई है। स्त्रीलिंग चीजों में कीर्ति, वाणी, स्मृति, बुद्धि और धृति (धैर्य) को महत्ता दी गई है। यह भी हमारी जातीय मनोवृत्ति का परिचायक है।

(i) भगवान बुद्ध को बुद्धत्व किस वृक्ष के नीचे प्राप्त हुआ था? 1
(अ) आम (ब) अश्वत्थ (स) कर्णिकार (द) अमलतास

(ii) बसन्त का अग्रदूत किसे कहा गया है? 1
(अ) आम का बौर (ब) अश्वत्थ का बौर (स) कर्णिकार का बौर (द) अमलतास का बौर

(iii) श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान की विभूतियों में माना गया है— 1
(अ) वाणी को (ब) भगवान बुद्ध को (स) भारतीय संस्कृति को (द) अश्वत्थ को

(iv) निम्नलिखित में से 'नदी' का पर्यायवाची है— 1
(अ) लहर (ब) सरिता (स) वीचि (द) तरंग

(v) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है— 1
(अ) जातीय परिस्थिति (ब) हिमालय का महत्त्व (स) भारतीय संस्कृति (द) भाषा की उपयोगिता

(vi) 'जंगम' शब्द का विपरीतार्थ है— 1
(अ) स्थावर (ब) गीता (स) स्मृति (द) धृति

निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए–

भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ॥
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है॥

हाँ, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है,
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है?
भगवान की भव-भूतियों का यह प्रथम भण्डार है।
विधि ने किया नर-सृष्टि का पहले यहीं विस्तार है॥

(vii) कवि ने 'भू-लोक का गौरव' किसे बताया है? 1
(अ) गंगा-जल को (ब) विश्व को (स) भारतवर्ष को (द) प्रकृति को

(viii) निम्न में से 'नर-सृष्टि' का सर्वप्रथम विस्तार किया है— 1
(अ) संसार ने (ब) विधि ने (स) मनोहर गिरि ने (द) भव-भूति ने

(ix) 'नूतन' शब्द का विलोम है— 1
(अ) वरदान (ब) अभिशाप (स) विस्तार (द) पुरातन

(x) निम्न में से भारत की श्रेष्ठता परिलक्षित होती है— 1
(अ) विफल गर्व (ब) ऋषिभूमि और भवभूति भण्डार
(स) सहृदय चिंतक (द) सुसज्जित क्षण

(xi) उपर्युक्त पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक नीचे लिखे विकल्पों से छाँटिए— 1
(अ) भारत की श्रेष्ठता (ब) मनुज का मन (स) भावी सजग (द) अग्नि समर

(xii) 'वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है।' इस पंक्ति का सही आशय है— 1
(अ) भारतभूमि संसार के सम्पूर्ण देशों में सर्वश्रेष्ठ है।
(ब) जगत कल्याण में आदर्श
(स) बालोपयोगी साहित्य का सृजन
(द) विकृत परम्पराओं का खण्डन

2. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(i) हिन्दी व्याकरण को मोटे तौर पर...............वर्गों में विभाजित किया गया है। 1
(ii) भाषा को शुद्ध लिखने व बोलने सम्बन्धी जानकारी देने वाले शास्त्र को...............कहते हैं। 1
(iii) "लक्षित पुस्तक पढ़ रहा है।" वाक्य में...............शब्द शक्ति है। 1
(iv) जब किसी शब्द के मुख्यार्थ में बाधा हो या अभिधा से अभीष्ट अर्थ का बोध न हो, वहाँ...............शब्द शक्ति होती है। 1
(v) जब कोई शब्द अपने एक से अधिक अर्थ प्रकट करे तो उस शब्द के कारण वहाँ...............अलंकार होता है। 1
(vi) "कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।" काव्य पंक्ति में प्रयुक्त...............अलंकार है। 1

3. निम्नलिखित अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति में दीजिए :

(i) निम्न पारिभाषिक शब्दों के अर्थ लिखिए :
(अ) Premises
(ब) Quarterly 1
(ii) 'अनुभाग' शब्द के लिए पारिभाषिक शब्द लिखिए। 1
(iii) प्रमुख जनसंचार माध्यमों के नाम लिखिए। 1
(iv) "अरे ये वैडिंग एनिवर्सरी वगैरह सब गोरे साहबों के चोंचले हैं।" यह शब्द किसने कहे? 1
(v) लेखक सौंदलगेकर मास्टर के किस प्रकार नजदीक पहुँच गया? 1
(vi) कौनसे दो शहर दुनिया के पुराने नियोजित शहर माने जाते हैं? 1
(vii) मुअनजो-दड़ो की खुदाई अब क्यों बंद कर दी गई है? 1
(viii) 'मौत के खिलाफ मनुष्य' नाम की किताब में लेखक ने क्या पढ़ा था? 1
(ix) औरतों की आँखें किन-किन ताकतों ने खोली है? 1
(x) 'निशा निमंत्रण' के गीत में कवि ने किस काव्यात्मक चित्रण की कोशिश की है? 1
(xi) महादेवी के प्रति अनमोल आत्मीयता से युक्त भक्तिन के बहाने क्या सन्देश दिया गया है? 1

खण्ड-ब

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर अधिकतम 40 शब्दों में दीजिए–

4. मुद्रित माध्यमों में लेखन हेतु किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? 2
5. वर्तमान इंटरनेट पत्रकारिता के बारे में संक्षेप में लिखिए। 2
6. 'फीचर लेखन' के बारे में लिखिए। 2
7. 'पतंग' कविता में किन-किन बिम्बों को चित्रित किया है? 2
8. 'बात सीधी थी पर' कविता का मूल भाव लिखिए। 2
9. मनुष्य को कौन-कौनसे दुर्गुण घायल कर बेकार बना देते हैं? 2
10. 'काले मेघा पानी दे' में लोक प्रचलित विश्वास और विज्ञान का द्वन्द्व चित्रण अपने शब्दों में लिखिए। 2

खण्ड-स

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

11. 'कैमरे में बंद अपाहिज' करुणा जगाने के मकसद से शुरू कार्यक्रम क्रूर बन जाता है। इस कथन का आशय लिखिए। **(उत्तर शब्द-सीमा : 60-80 शब्द)** 3

अथवा

'भवितव्यता डराती है।' 'सहर्ष स्वीकारा है' के आधार पर समझाइए। **(उत्तर शब्द-सीमा : 60-80 शब्द)**

12. 'अकस्मात् गाँव पर यह वज्रपात हुआ।' इस कथन के आधार पर चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों को लिखिए। **(उत्तर शब्द-सीमा : 60-80 शब्द)** 3

अथवा

'चार्ली चैप्लिन किसी भी संस्कृति को विदेशी नहीं लगते हैं।' इस कथन से आप कहाँ तक सहमत है? अपने विचार लिखिए। **(उत्तर शब्द-सीमा : 60-80 शब्द)**

13. 'हरिवंशराय बच्चन' का कवि परिचय लिखिए। **(उत्तर शब्द-सीमा : 80-100 शब्द)** 4

अथवा

'जैनेन्द्र कुमार' का लेखक परिचय लिखिए। **(उत्तर शब्द-सीमा : 80-100 शब्द)**

14. 'संयुक्त परिवार वाले उस दौर में पति ने हमारा पक्ष कभी नहीं लिया।' इस कथन को 'सिल्वर वैडिंग' पाठ के प्रासंगिक वर्तमान परिप्रेक्ष्य में तर्क सहित लिखिए। **(उत्तर शब्द-सीमा : 120 शब्द)** 6

अथवा

'रोते-धोते पाठशाला फिर से शुरू हो गई।' इस कथन में 'जूझ' पाठ के आधार पर किसान-मजदूर की संघर्ष झाँकी चित्रित कीजिए। **(उत्तर शब्द-सीमा : 120 शब्द)**

खण्ड-द

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **2+4=6**

नौरस गुंचे पंखड़ियों की नाजुक गिरहें खोले हैं
या उड़ जाने को रंगों—बू गुलशन में पर खोले हैं।
तारे आँखें झपकावे हैं जर्रा-जर्रा सोये हैं
तुम भी सुनो हो यारो! शब में सन्नाटे कुछ बोले हैं
हम हो या किस्मत हो हमारी दोनों को इक ही काम मिला
किस्मत हमको रो लेवे है हम किस्मत को रो ले हैं।
जो मुझको बदनाम करे हैं काश वे इतना सोच सकें
मेरा परदा खोले हैं या अपना परदा खोले हैं।

अथवा

नभ में पाँति - बँधे बगुलों के पंख,
चुराए लिए जातीं वे मेरी आँखें।
कजरारे बादलों की छाई नभ छाया,
तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया।

हौले-हौले जाती मुझे बाँध निज माया से।
उसे कोई तनिक रोक रक्खो।
वह तो चुराए लिए जाती मेरी आँखें
नभ में पाँती - बँधी बगुलो को पाँखे।

16. **निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :** **2+4=6**

जेठ की जलती धूप में, जबकि धरित्री निर्धूम अग्निकुण्ड बनी हुई थी, शिरीष नीचे से ऊपर तक फूलों से लद गया था। कम फूल इस प्रकार की गरमी में फूल सकने की हिम्मत करते हैं। कर्णिकार और आरग्वध (अमलतास) की बात मैं भूल नहीं रहा हूँ। वे भी आस-पास बहुत हैं। लेकिन शिरीष के साथ आरग्वध की तुलना नहीं की जा सकती। वह पन्द्रह-बीस दिन के लिए फूलता है, वसंत ऋतु के पलाश की भाँति। कबीरदास को इस तरह पन्द्रह दिन के लिए लहक उठना पसंद नहीं था। यह भी क्या कि दस दिन फूले और फिर खंखड़-के-खंखड़ 'दिन दस फूला फूलिके खंखड़ भया पलास!'

अथवा

जाति-प्रथा का श्रम विभाजन मनुष्य की स्वेच्छा पर निर्भर नहीं रहता। मनुष्य की व्यक्तिगत भावना तथा व्यक्तिगत रुचि का इसमें कोई स्थान अथवा महत्त्व नहीं रहता। 'पूर्व लेख' ही इसका आधार है। इस आधार पर हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि आज के उद्योगों में गरीबी और उत्पीड़न इतनी बड़ी समस्या नहीं जितनी यह कि बहुत से लोग निर्धारित कार्य को 'अरुचि' के साथ केवल विवशतावश करते हैं। ऐसी स्थिति स्वभावतः मनुष्य को दुर्भावना से ग्रस्त रहकर टालू काम करने और कम काम करने के लिए प्रेरित करती है। ऐसी स्थिति में जहाँ काम करने वालों का न दिल लगता हो न दिमाग, कोई कुशलता कैसे प्राप्त की जा सकती है।

17. सचिव, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर की ओर से बोर्ड की पाठ्यपुस्तकें क्रय सूचना करने हेतु विज्ञप्ति तैयार कीजिए। 4

अथवा

अपने विद्यालय में कार्यालय सामग्री क्रय करने हेतु एक निविदा लिखिए।

18. **निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर सारगर्भित निबन्ध लिखिए। (शब्द-सीमा : 300 शब्द)** **5**

1. कोरोना महामारी — एक अभिशाप
2. युवा शक्ति एवं चुनौतियाँ
3. साक्षरता अभियान के बढ़ते कदम
4. समाज में नारी का योगदान

अनिवार्य हिन्दी कक्षा 12

आरोह भाग-2

काव्य-खण्ड

1. हरिवंश राय बच्चन

कवि परिचय–आधुनिक हिन्दी साहित्य में हालावाद के प्रवर्तक डॉ. हरिवंश राय 'बच्चन' का जन्म सन् 1907 ई. को इलाहाबाद में हुआ। इनके पिता का नाम प्रतापनारायण और माता का नाम सरस्वती देवी था। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक एवं स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण की तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पीएच.डी. उपाधि प्राप्त की। ये इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्राध्यापक रहे, फिर आकाशवाणी के साहित्यिक कार्यक्रमों से सम्बद्ध तथा विदेश मन्त्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ रहे। सन् 1966 में राज्यसभा के लिए राष्ट्रपति द्वारा नामित हुए। इसी वर्ष इन्हें 'सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार' मिला। सन् 1969 में 'दो चट्टानें' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। सन् 1976 में इन्हें 'पद्मभूषण' तथा सन् 1992 में 'सरस्वती पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। जनवरी सन् 2003 में मुम्बई में इनका निधन हुआ।

कवि हरिवंश राय बच्चन का कृतित्व अतीव महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इनकी प्रमुख रचनाओं के नाम हैं— मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा-निमन्त्रण, आकुल-अन्तर, एकान्त संगीत, मिलनयामिनी, सतरंगिणी, आरती और अंगारे, नये-पुराने झरोखे, टूटी-फूटी कड़ियाँ (काव्य-संग्रह); क्या भूलूँ क्या याद करूँ, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, दशद्वार से सोपान तक (आत्मकथा चार खण्ड) तथा प्रवास की डायरी आदि। बच्चनजी के समस्त वाङ्मय को 'बच्चन ग्रन्थावली' नाम से दस खण्डों में प्रकाशित किया गया है।

कविता-परिचय–प्रस्तुत पाठ में हरिवंश राय बच्चन द्वारा रचित 'आत्म-परिचय' कविता 'निशा-निमन्त्रण' काव्य-संग्रह का एक गीत संकलित है। इस गीत में यह प्रतिपादित किया गया है कि अपने को जानना दुनिया को जानने से भी अधिक कठिन है। समाज से व्यक्ति का सम्बन्ध खट्टा-मीठा तो होता ही है, जग-जीवन से पूरी तरह निरपेक्ष रहना सम्भव नहीं है। व्यक्ति को चाहे दूसरों के आक्षेप कष्टकारी लगें, परन्तु अपनी अस्मिता, अपनी पहचान का उत्स, उसका परिवेश ही उसकी दुनिया है। सांसारिक द्विधात्मक सम्बन्धों के रहते हुए भी व्यक्ति जीवन में सामंजस्य स्थापित कर सकता है। पाठ में संकलित 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' गीत में कवि हरिवंश राय बच्चन ने अपने जीवन के अकेलेपन की कुण्ठा अभिव्यक्त की है। यात्रा-पथ पर चलता हुआ पथिक 'अब मंजिल पास ही है' ऐसा सोचकर अधिक तेजी से चलने लगता है। वह सोचता है कि घर पर लोग उसकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे, इससे उसके कदमों की गति बढ़ जाती है। लेकिन जब कवि का जीवन एकाकी हो, तो वह किसके लिए ऐसी उत्कण्ठा रखेगा? कवि ने इसमें अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद के कुण्ठामय जीवन का चित्रण करते हुए यह सन्देश दिया है कि जीवन में लक्ष्य-प्राप्ति हेतु संघर्ष करने से उत्साह बढ़ता है, परन्तु प्रेम के अभाव में निराशा और दुर्बलता आती है।

कठिन शब्दार्थ एवं सप्रसंग व्याख्याएँ

1. आत्म-परिचय

(1)

मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर,
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ!

मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ!

कठिन-शब्दार्थ–झंकृत = झनझनाकर बजना। **तार** = तारों का बाजा वीणा आदि। **स्नेह-सुरा** = प्रेम रूपी शराब।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश कवि हरिवंशराय बच्चन द्वारा लिखित काव्य-संग्रह 'निशा-निमंत्रण' की कविता 'आत्मपरिचय' से लिया गया है। इसमें कवि ने अपनी जीवन-शैली का परिचय दिया है कि वह किस प्रकार विपरीत परिस्थितियों में भी जीवन में स्नेह-भार लिये घूमते हैं।

व्याख्या–कवि कहता है कि मैं इस सांसारिक जीवन का भार अपने ऊपर लिये हुए फिरता रहता हूँ। किसी प्रिय ने मेरे हृदय की कोमल भावनाओं का स्पर्श करके (हृदय रूपी वीणा के तारों से) इसे झंकृत कर दिया है। इस तरह मैं अपनी साँसों के दो तार लिये हुए जग-जीवन में फिरता रहता हूँ।

कवि बच्चन कहते हैं कि मैं प्रेमरूपी शराब को पीकर मस्त रहता हूँ। इसी मस्ती में इस बात का विचार कभी नहीं करता हूँ कि लोग मेरे सम्बन्ध में क्या कहते हैं। मैं इस बात की चिन्ता नहीं करता हूँ। यह संसार तो उन्हें पूछता है, अर्थात् प्रशंसा करता है जो उनके कहने पर चलते हैं, उनके अनुसार गाते हैं। किन्तु मैं अपने मन की भावनाओं के अनुसार गाता हूँ तथा कविता में अपने ही मनोभावों को अभिव्यक्ति देता हूँ।

विशेष–(1) कवि ने इसमें अपने जीवन के सुख-दु:ख व प्रेम के दायित्व का भार स्वयं उठाये चलने को कहते हैं। साथ ही स्वयं के मनानुसार चलने की बात कहते हैं।

(2) खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग है। रूपक व अनुप्रास अलंकारों की सहज अभिव्यक्ति हुई है। प्रसाद गुण का प्रयोग है। कोमलकान्त शब्दावली का प्रयोग है।

(2)

मैं निज उर के उद्‌गार लिए फिरता हूँ,
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ;
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता,
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ!

मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख-दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ;
जग भव-सागर तरने को नाव बनाए,
मैं भव-मौजों पर मस्त बहा करता हूँ!

कठिन-शब्दार्थ–निज = अपना। **उर** = हृदय। **उद्‌गार** = हृदय के भाव। **भव-मौजों** = संसार की लहरों, तटों।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश कवि हरिवंशराय बच्चन द्वारा लिखित काव्य-संग्रह 'निशा-निमंत्रण' की कविता 'आत्मपरिचय' से लिया गया है। जिसमें कवि ने स्वयं के जीवन-शैली तथा संसार के व्यवहार का परिचय दिया है।

व्याख्या–कवि कहता है कि मैं अपने हृदय में नये-नये भाव रखता हूँ। मैं अपने ही हृदय द्वारा दिये गए उपहारों (सुख-दु:ख) को लिये घूमता रहता हूँ। मैं उन्हीं मनोभावों को लेकर उड़ता-घुमड़ता रहता हूँ। मैं किसी अन्य के इशारे पर नहीं चलता, मैं अपने हृदय की भावना को ही श्रेष्ठ भेंट मानकर अपनाता रहता हूँ। मुझे यह सारा संसार अधूरा लगता है, इसमें प्रेम का अभाव-सा है। यह इसी कारण मुझे अच्छा नहीं लगता है। मेरे मन में प्रेममय सुन्दर सपनों का संसार है और उसी को लेकर मैं आगे बढ़ता रहता हूँ, अर्थात् मैं अपनी भावनाओं के अनुसार प्रेममय संसार की रचना करता रहता हूँ।

कवि कहता है कि मेरे हृदय में प्रेम की अग्नि जलती रहती है और मैं उसी की आँच से स्वयं तपा करता हूँ। कवि कहता है कि मैं प्रेम-दीवानगी में मस्त होकर जीवन में सुख-दु:ख दोनों दशाओं में मग्न रहता हूँ। यह संसार विपदाओं का सागर है, मैं इसे प्रेमरूपी नाव से पार करना चाहता हूँ। इसलिए मैं भव-सागर की लहरों पर प्रेम की उमंग और मस्ती के साथ बहता रहता हूँ। इस तरह मैं प्रसन्नतापूर्वक जीवन-नाव से संसार-सागर के किनारे लग जाता हूँ। सभी परिस्थितियों में मैं मस्त रहता हूँ।

विशेष–(1) कवि संसार की रीतियों से अलग स्वयं के सुख-दु:ख एवं का प्रेम में मग्न रहने का भाव प्रकट करते हैं। उनका कवित्व संसार ही उनका जीवन है।

(2) हिन्दी खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है। भव-सागर में रूपक अलंकार का प्रयोग है। कोमलकान्त शब्दावली एवं प्रसाद गुण का प्रयोग हुआ है। तुकान्त व गेयता प्रमुख गुण है।

(3)

मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ,
उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ,
जो मुझको बाहर हँसा, रुलाती भीतर,
मैं, हाय, किसी की याद लिए फिरता हूँ!

कर यत्न मिटे सब, सत्य किसी ने जाना?
नादान वहीं है, हाय, जहाँ पर दाना!
फिर मूढ़ न क्या जग, जो इस पर भी सीखे?
मैं सीख रहा हूँ, सीखा ज्ञान भुलाना!

कठिन-शब्दार्थ–उन्माद = पागलपन, प्रेम की अत्यधिक सनक। **अवसाद** = दु:ख से उत्पन्न उदासी, विषाद। **मूढ़** = मूर्ख।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश कवि हरिवंश राय बच्चन द्वारा लिखित काव्य-संग्रह 'निशा-निमंत्रण' की कविता 'आत्म-परिचय' से लिया गया है। जिसमें कवि अपने हृदय की अवस्थाएँ एवं संसार के व्यवहार पर अपनी भावनाएँ प्रकट कर रहे हैं कि कवि के हृदय के सत्य को किसी ने भी जानने की कोशिश नहीं की।

व्याख्या–कवि हरिवंश राय 'बच्चन' अपने सम्बन्ध में कहते हैं कि मैं युवावस्था के नशे में रहता हूँ, मेरे ऊपर प्रेम का पागलपन सवार रहता है। इस दीवानगी में मुझे कदम-कदम पर निराशा भी मिलती रहती है, अर्थात् दु:ख-विषाद की भावना भी इसमें विद्यमान रहती है। इससे मेरी मन:स्थिति बाहर से तो हँसते हुए अर्थात् प्रसन्नचित्त रहती है, परन्तु अन्दर-ही-अन्दर रुलाती रहती है। इस स्थिति का मूल कारण यह है कि मैं अपने हृदय में किसी प्रिय की मधुर स्मृति बसाए हुए हूँ और हर समय उसकी याद करता रहता हूँ और उसके न मिलने से दु:खी हो जाता हूँ।

कवि कहता है कि मैंने सारे उपाय, सारे प्रयत्न करके देख लिये लेकिन किसी ने भी मेरे हृदय के सत्य को जानने की कोशिश नहीं की। कोई भी मेरे इस जीवन-सत्य को कोई नहीं जान पाया। इस तरह जिसे भी देखो वही नादानी कर रहा है। इस संसार में जिसे जहाँ पर भी धन, वैभव और भोग-सामग्री मिल जाती है, वह वहीं पर दाना चुगने लगता है, अर्थात् स्वार्थ पूरा करने लगता है। परन्तु कवि की दृष्टि में ऐसे लोग मूर्ख होते हैं, क्योंकि वे जान-बूझकर सांसारिक लाभ-मोह के चक्कर में उलझे रहते हैं। मैं संसार की इस नासमझी को समझ गया हूँ। इसीलिए मैं सांसारिकता का पाठ सीख रहा हूँ और सीखे हुए ज्ञान को अर्थात् पुरानी बातों को भूलकर अपने मन के अनुसार चलना सीख रहा हूँ।

विशेष–(1) कवि ने अपने हृदय के दु:खों को तथा संसार के मूढ़ व्यक्तियों की विचित्र दशा को बताया है।

(2) कोमलकान्त शब्दावली, तत्सम भाषा का प्रयोग तथा अनुप्रास अलंकार की प्रस्तुति द्रष्टव्य है।

(3) तत्सम प्रधान खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग है।

(4)

मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
मैं बना-बना कितने जग रोज मिटाता;
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता!

कठिन-शब्दार्थ–वैभव = धन-दौलत। **पग** = कदम।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश कवि हरिवंश राय बच्चन द्वारा लिखित काव्य संग्रह 'निशा-निमंत्रण' की कविता 'आत्म-परिचय' से लिया गया है। इसमें कवि ने संसार एवं अपने हृदय के सम्बन्ध तथा संसार की निष्ठुरता को व्यक्त किया है।

व्याख्या–कवि अपने और संसार की क्रियाओं के विषय में कहते हैं कि मैं एक कवि जो कि स्वभाव से ही संवेदनशील होता है और कहाँ ये संसार? हम दोनों के मध्य किस प्रकार का रिश्ता? संसार अपनी निष्ठुरता के लिए जाना जाता है और मैं अपने प्रेममय हृदय के लिए। इसलिए न जाने मैं अपनी कल्पनाओं में अपनी भावनाओं के अनुरूप, कितने ही संसार रोज बनाता-मिटाता हूँ। मेरा संसार से कोई नाता या सम्बन्ध नहीं है। मेरा तो इस संसार के साथ टकराव-अलगाव चलता रहता है। मैं रोज एक नये संसार की अर्थात् नये आदर्श की रचना करता हूँ और उससे पूरी तरह सन्तुष्ट

न होने पर उसे मिटाने का प्रयास करता हूँ। यह संसार जिस धन-समृद्धि को एकत्र करने में लगा रहता है, मैं उसे पूरी तरह ठुकरा देता हूँ। इस तरह मैं संसार को ठुकराकर सत्य और प्रेम के पथ पर बढ़ता रहता हूँ।

विशेष-(1) कवि ने यहाँ स्वयं की अर्थात् कवि जीवन की सांसारिकता से भिन्न विशिष्ट बताया है। प्राय: कवि जनभावना के काल्पनिक संसार में जीते हैं। वे सांसारिकता को ठोकर मारते हैं। इस तथ्य की यहाँ सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है।

(2) ''जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव'' विशेषण विपर्यय है।

(3) अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश, अनुप्रास, यमक अलंकार द्रष्टव्य है।

(5)

मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हो जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ।
मैं रोया, इसको तुम कहते हो गाना,
मैं फूट पड़ा, तुम कहते, छंद बनाना;
क्यों कवि कहकर संसार मुझे अपनाए,
मैं दुनिया का हूँ एक नया दीवाना।

(माध्य. शिक्षा बोर्ड, मॉडल पेपर, 2021-22)

कठिन-शब्दार्थ-रोदन = रोना। **राग** = प्रेम। **भूपों** = राजाओं। **प्रासाद** = महल। **दीवाना** = पागल, मस्त।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश कवि हरिवंश राय बच्चन द्वारा रचित काव्य संग्रह 'निशा-निमंत्रण' की कविता 'आत्म-परिचय' से लिया गया है। इसमें कवि ने संसार एवं अपने हृदय के सम्बन्ध तथा संसार की निष्ठुरता को व्यक्त किया है।

व्याख्या-कवि कहता है कि मेरे रोदन में भी मेरा प्रेम-भाव छलकता है। मैं अपने गीतों में प्रेम के आँसू बहाता हूँ। मेरी वाणी यद्यपि कोमल और शीतल है, फिर भी उसमें प्रेम की तीव्र ऊष्मा एवं वेदना का ताप है। जिस प्रेम पर राजाओं के विशाल महल न्यौछावर होते हैं, उन पर मैं अपने प्रेम के खण्डहर न्यौछावर कर सकता हूँ। प्रेम की निराशा के कारण मेरा जीवन एक खण्डहर जैसा है, फिर भी मैं उस खण्डहर रूपी प्रेम को अपने जीवन का अहम भाग मान साथ लिये फिरता हूँ। कवि इसमें अपने प्रेम की पीड़ा को स्वयं साथ रखने की बात कह रहे हैं।

कवि कहता है कि जब मैं रोया और मेरे हृदय का दु:ख करुण शब्दों में व्यक्त हुआ, तो इसे लोग गाना (गीत) कहने लगते हैं। जब मैं प्रेम के आवेग से भरकर पूरे उन्माद से अपने भावों को व्यक्त करता हूँ—तब संसार के लोग उसे छन्द कहने लगते हैं। वास्तव में तो मैं कवि नहीं हूँ, अपितु प्रेम-दीवाना हूँ।

विशेष-(1) कवि अपनी संवेदनशील भावनाओं को व्यक्त कर रहे हैं। सांसारिक लेन-देन से उनकी हृदय की पीड़ा को कोई मतलब नहीं है। वे अपने दु:ख में भी प्रसन्न हैं।

(2) कोमलकान्त शब्दावली, विरोधाभासी उपमान तथा अलंकारों का प्रयोग निहित है।

(3) इसमें उमर खय्याम की रुबाइयों जैसी मस्ती है।

(6)

मैं दीवानों का वेश लिए फिरता हूँ,
मैं मादकता नि:शेष लिए फिरता हूँ;
जिसको सुनकर जग झूम, झुके, लहराए,
मैं मस्ती का संदेश लिए फिरता हूँ!

कठिन-शब्दार्थ-मादकता = मस्ती, नशे की स्थिति। **नि:शेष** = सम्पूर्ण, जिसमें कुछ न बचे।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश कवि हरिवंश राय बच्चन द्वारा रचित काव्य संग्रह 'निशा-निमंत्रण' की कविता 'आत्म-परिचय' से लिया गया है। इसमें कवि ने अपने दु:ख-पीड़ा व अपने मस्त-मौला व्यवहार का चित्रण किया है।

व्याख्या-कवि कहता है कि मैं संसार में प्रेम-दीवानों की तरह विचरण करता हूँ। मैं जहाँ भी जाता हूँ अपनी दीवानगी से सारे वातावरण को मस्ती से भर देता हूँ। मेरी हार्दिक भावना प्रेम की सम्पूर्ण मस्ती से छायी हुई है। मैं प्रेम और यौवन के गीत गाता हूँ। मैं सभी को इसी प्रेम की मस्ती में झूमने का सन्देश देता रहता हूँ। लोग मेरे इसी सन्देश को गीत समझ लेते हैं। जबकि मैं सबको अपने व्यवहार द्वारा सभी दु:खों से दूर रहने का संदेश देना चाहता हूँ।